सुसमाचार

The Good News

इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल को एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था। जिब्राईल उसके पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है, तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ हैं।" यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता है? तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ से परमेश्वर प्रसन्न है। सुन! तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखेगी। वह महान, होगा और वह परम परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा। वह अनन्त काल तक याकूब के घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत कभी नहीं होगा।" मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तूने मेरे लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला गया। लूका 1:26-33 & 38

During Elizabeth's sixth month of pregnancy, God sent the angel Gabriel to a virgin girl who lived in Nazareth, a town in Galilee. She was engaged to marry a man named Joseph from the family of David. Her name was Mary. The angel came to her and said, "Greetings! The Lord is with you; you are very special to him." But Mary was very confused about what the angel said. She wondered, "What does this mean?" The angel said to her, "Don't be afraid, Mary, because God is very pleased with you. Listen! You will become pregnant and have a baby boy. You will name him Jesus. He will be great. People will call him the Son of the Most High God, and the Lord God will make him king like his ancestor David. He will rule over the people of Jacob forever; his kingdom will never end." Mary said, "I am the servant of the Lord God. Let this thing you have said happen to me!" Then the angel went away. Luke 1:26-33 & 38

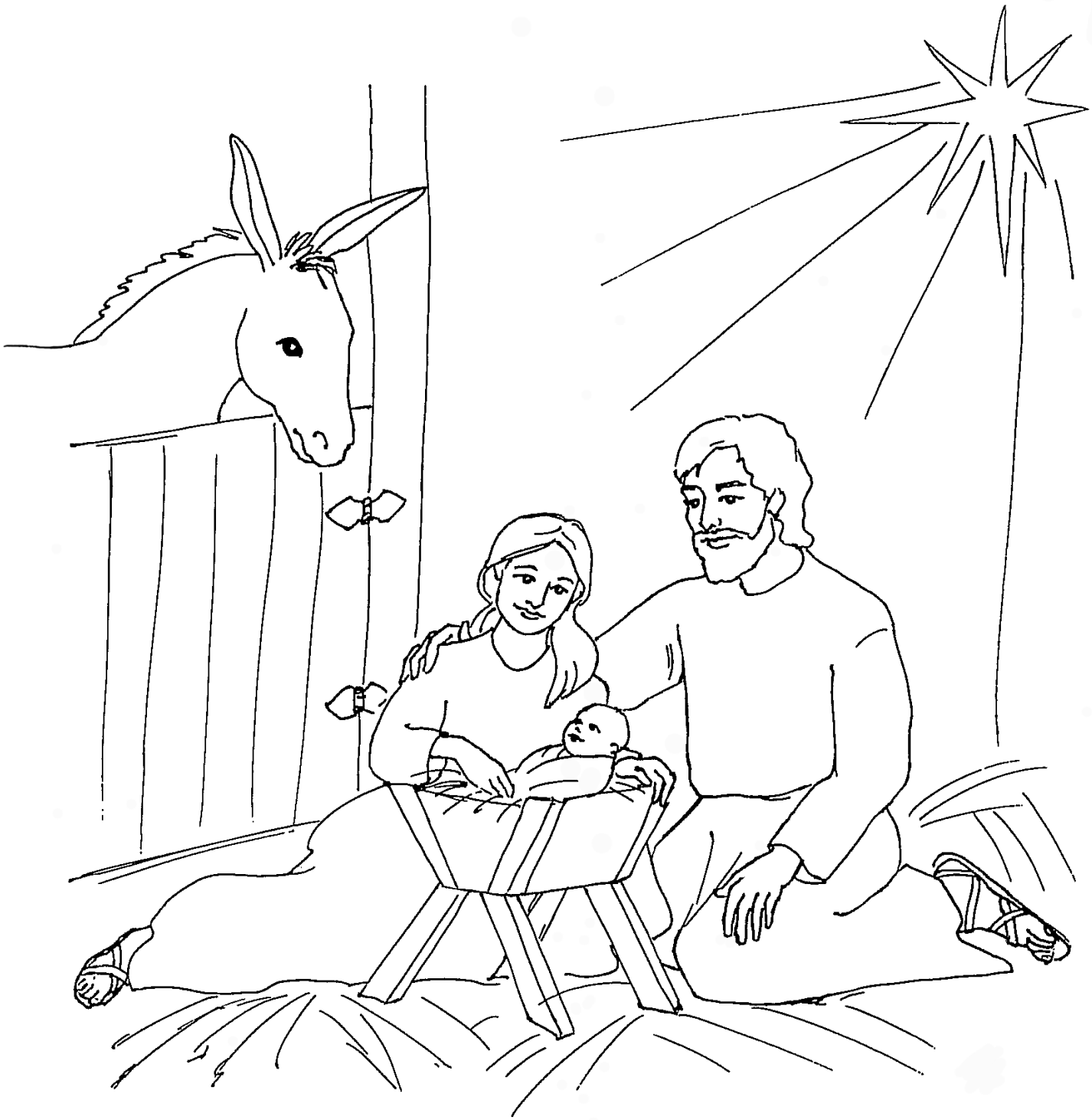

यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं वंश से था, इसलिये वह भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। वह वहाँ अपनी मँगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती भी थी, अपना नाम लिखवाने गया था। ऐसा हुआ कि अभी जब वे वहीं थे, मरियम का बच्चा जनने का समय आ गया। और उसने अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। क्योंकि वहाँ सराय के भीतर उन लोगों के लिये कोई स्थान नहीं मिल पाया था इसलिए उसने उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में लिटा दिया। लूका 2:4-7

So Joseph left Nazareth, a town in Galilee, and went to the town of Bethlehem in Judea. It was known as the town of David. Joseph went there because he was from the family of David. Joseph registered with Mary because she was engaged to marry him. (She was now pregnant.) While Joseph and Mary were in Bethlehem, the time came for her to have the baby. She gave birth to her first son. She wrapped him up well and laid him in a box where cattle are fed. She put him there because the guest room was full. Luke 2:4-7

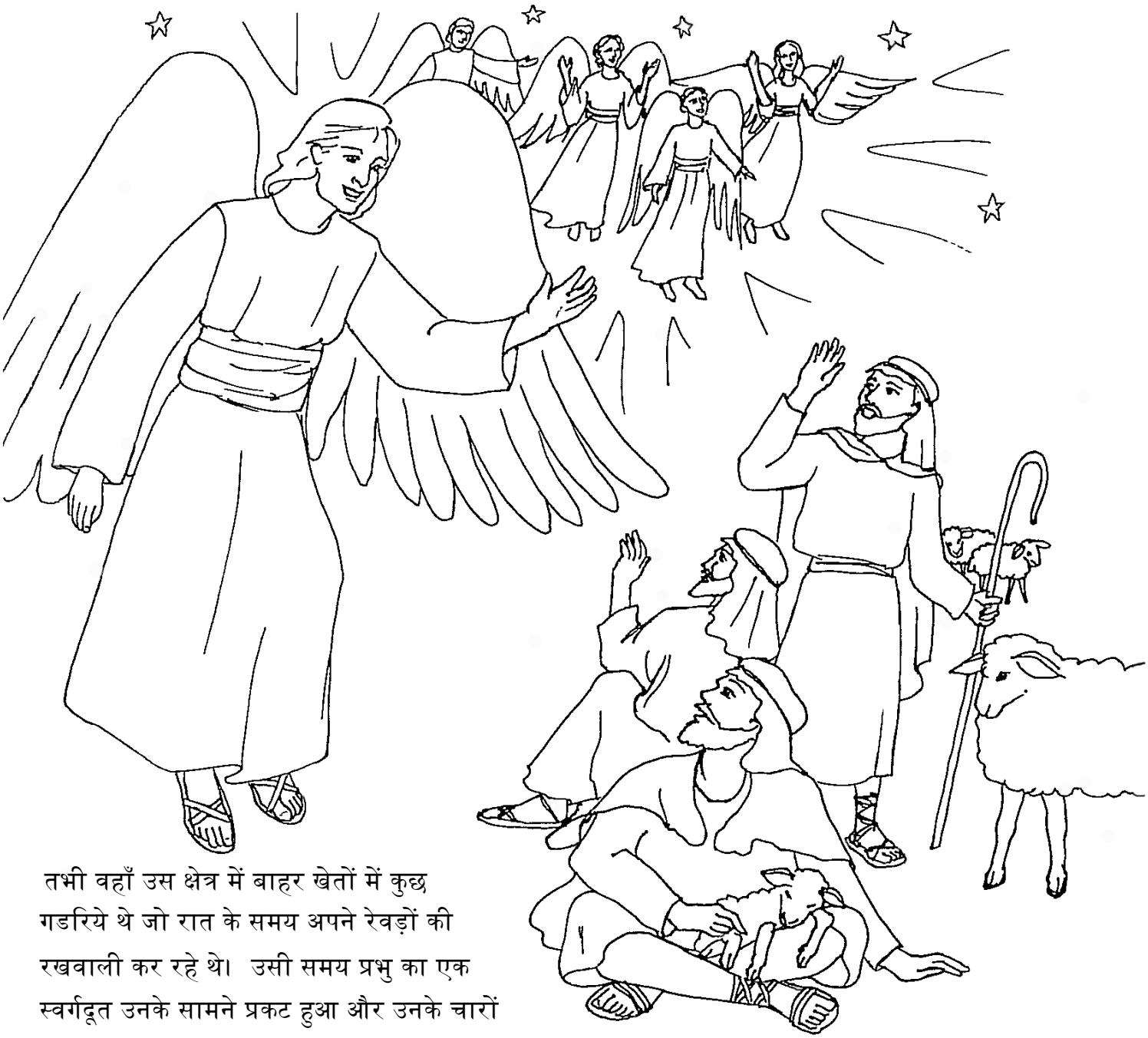

तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ गडरिये थे जो रात के समय अपने रेवड़ों की रखवाली कर रहे थे। उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ और उनके चारों ओर प्रभु का तेज प्रकाशित हो उठा। वे सहम गए। तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ, जिससे सभी लोगों को महान आनन्द होगा। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु मसीह का जन्म हुआ है। तुम्हें उसे पहचान ने का चिन्ह होगा कि तुम एक बालक को कपड़ों में लिपटा, चरनी में लेटा पाओगे।" उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ बहुत से और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह कहते हुए प्रभु की स्तुति कर रहे थे, "स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो

और धरती पर उन लोगों को शांति मिले जिनसे वह प्रसन्न है।" लूका 2:8-14

That night, some shepherds were out in the fields near Bethlehem watching their sheep. An angel of the Lord appeared to them, and the glory of the Lord was shining around them. The shepherds were very afraid. The angel said to them, "Don't be afraid. I have some very good news for you—news that will make everyone happy. Today your Savior was born in David's town. He is Christ, the Lord. This is how you will know him: You will find a baby wrapped in pieces of cloth and lying in a feeding box." Then a huge army of angels from heaven joined the first angel, and they were all praising God, saying, "Praise God in heaven, and on earth let there be peace to the people who please him." Luke 2:8-14

उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट-पुष्ट होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह था। लूका 2:40

The little boy Jesus was developing into a mature young man, full of wisdom. God was blessing him. Luke 2:40

यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा देते आया था। उसने लोगों से पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा लेने को कहा। फिर समूचे यहूदिया देश के और यरूशलेम के लोग उसके पास गये और उस ने यर्दन नदीं में उन्हें बपतिस्मा दिया। क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये थे। यूहन्ना ऊँट के बालों के बने वस्त्र पहनता था और कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाया करता था। वह इस बात का प्रचार करता था: "मेरे बाद मुझसे अधिक शक्तिशाली एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों के बन्ध तक खोल सकूँ। मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह पवित्र आत्मा से तुम्हें बपतिस्मा देगा।" उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील आया और यर्दन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश को खुले हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप में आत्मा उस पर उतर रहा है। फिर आकाशवाणी हुई: "तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हूँ।" मरकुस 1:4-11

So John the Baptizer came and was baptizing people in the desert area. He told them to be baptized to show that they wanted to change their lives, and then their sins would be forgiven. All the people from Judea, including everyone from Jerusalem, came out to John. They confessed the bad things they had done, and he baptized them in the Jordan River. John wore clothes made from camel's hair and a leather belt around his waist. He ate locusts and wild honey. This is what John told the people: "There is someone coming later who is able to do more than I can. I am not good enough to be the slave who stoops down to untie his sandals. I baptize you with water, but the one who is coming will baptize you with the Holy Spirit." About that time Jesus came from the town of Nazareth in Galilee to the place where John was. John baptized Jesus in the Jordan River. As Jesus was coming up out of the water, he saw the sky torn open. The Spirit came down on him like a dove. A voice came from heaven and said, "You are my Son, the one I love. I am very pleased with you." Mark 1:4-11

फिर यीशु एक पहाड़ पर चला गया और उसने जिनको वह चाहता था, अपने पास बुलाया। वे उसके पास आये। जिनमें से उसने बारह को चुना और उन्हें प्रेरित की पदवी दी। उसने उन्हें चुना ताकि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें उपदेश प्रचार के लिये भेजे। और वे दुष्टात्माओं को खदेड़ बाहर निकालने का अधिकार रखें। मरकुस 3:13-15

Then Jesus went up on a hill and invited those he wanted to go with him. So they joined him there. And he chose twelve men and called them apostles. He wanted these twelve men to be with him, and he wanted to send them to other places to tell people God's message. He also wanted them to have the power to force demons out of people. Mark 3:13-15

वहाँ फ़रीसियों का एक आदमी था जिसका नाम था नीकुदेमुस। वह यहूदियों का नेता था। वह यीशु के पास रात में आया और उससे बोला, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू गुरु है और परमेश्वर की ओर से आया है, क्योंकि ऐसे आश्चर्यकर्म जिसे तू करता है परमेश्वर की सहायता के बिना कोई नहीं कर सकता।" जवाब में यीशु ने उससे कहा, "सत्य सत्य, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।" नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? निश्चय ही वह अपनी माँ की कोख में प्रवेश करके दुबारा तो जन्म ले नहीं सकता!" यीशु ने जवाब दिया, "सच्चाई तुम्हें मैं बताता हूँ। यदि कोई आदमी जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। माँस से केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न हो वह आत्मा है।" यूहन्ना 3:1-6

There was a man named Nicodemus, one of the Pharisees. He was an important Jewish leader. One night he came to Jesus and said, "Teacher, we know that you are a teacher sent from God. No one can do these miraculous signs that you do unless they have God's help." Jesus answered, "I assure you, everyone must be born again. Anyone who is not born again cannot be in God's kingdom." Nicodemus said, "How can a man who is already old be born again? Can he go back into his mother's womb and be born a second time?" Jesus answered, "Believe me when I say that everyone must be born from water and the Spirit. Anyone who is not born from water and the Spirit cannot enter God's kingdom. The only life people get from their human parents is physical. But the new life that the Spirit gives a person is spiritual. John 3:1-6

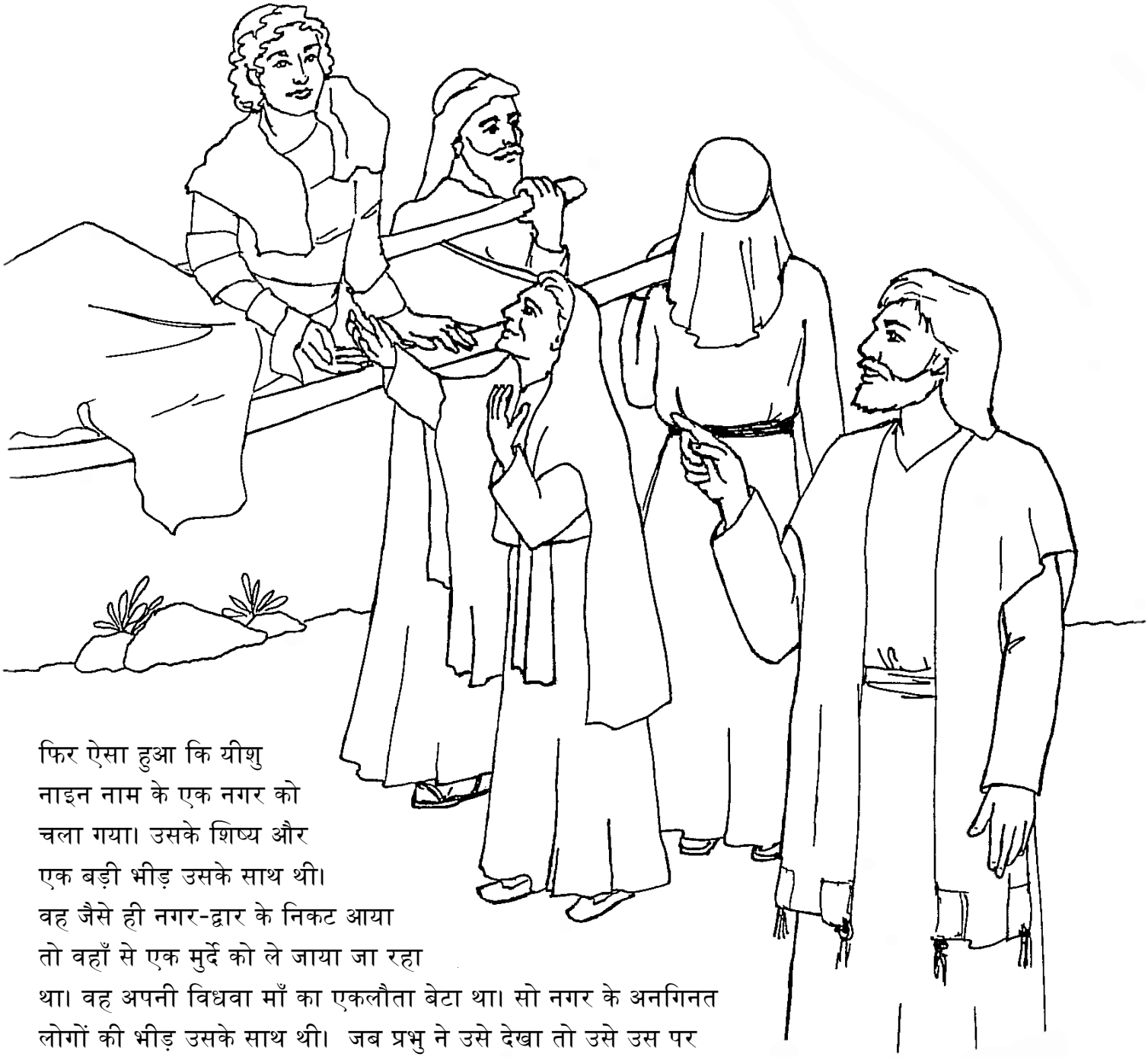

फिर ऐसा हुआ कि यीशु
नाइन नाम के एक नगर को
चला गया। उसके शिष्य और
एक बड़ी भीड़ उसके साथ थी।
वह जैसे ही नगर-द्वार के निकट आया
तो वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा रहा
था। वह अपनी विधवा माँ का एकलौता बेटा था। सो नगर के अनगिनत लोगों की भीड़ उसके साथ थी। जब प्रभु ने उसे देखा तो उसे उस पर बहुत दया आयी। वह बोला, "रो मत।" फिर वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे लोग जो ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु ने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, 'खड़ा हो जा!'" सो वह मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी माँ को वापस लौटा दिया। और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर उठे। और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा करने लगे कि "हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ है।" और कहने लगे, "परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के लिये आ गया है।" लूका 7:11-16

The next day Jesus and his followers went to a town called Nain. A big crowd was traveling with them. When Jesus came near the town gate, he saw some people carrying a dead body. It was the only son of a woman who was a widow. Walking with her were many other people from the town. When the Lord saw the woman, he felt very sorry for her and said, "Don't cry." He walked to the open coffin and touched it. The men who were carrying the coffin stopped. Jesus spoke to the dead son: "Young man, I tell you, get up!" Then the boy sat up and began to talk, and Jesus gave him back to his mother. Everyone was filled with fear. They began praising God and said, "A great prophet is here with us!" and "God is taking care of his people." Luke 7:11-16

जब यीशु ने आँख उठाई और देखा कि एक विशाल भीड़ उसकी तरफ़ आ रही है तो उसने फिलिप्पुस से पूछा, "इन सब लोगों को भोजन कराने के लिए रोटी कहाँ से खरीदी जा सकती है?" यीशु ने यह बात उसकी परीक्षा लेने के लिए कही थी क्योंकि वह तो जानता ही था कि वह क्या करने जा रहा है। फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों से भी इतनी रोटियाँ नहीं ख़रीदी जा सकती हैं जिनमें से हर आदमी को एक निवाले से थोड़ा भी ज़्यादा मिल सके। यीशु के एक दूसरे शिष्य शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने कहा, "यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों में इतने से क्या होगा।" यीशु ने उत्तर दिया, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे। फिर यीशु ने रोटियाँ लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको परोस दीं। इसी तरह जितनी वे चाहते थे, उतनी मछलियाँ भी उन्हें दे दीं। जब उन के पेट भर गये यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकटठा कर लो ताकि कुछ बेकार न जाये।" फिर शिष्यों ने लोगों को परोसी गयी जौ की उन पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं। यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोग कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति वही नबी है जिसे इस जगत् में आना है।" यूहन्ना 6:5-14

Jesus looked up and saw a crowd of people coming toward him. He said to Philip, "Where can we buy enough bread for all these people to eat?" He asked Philip this question to test him. Jesus already knew what he planned to do. Philip answered, "We would all have to work a month to buy enough bread for each person to have only a little piece!" Another follower there was Andrew, the brother of Simon Peter. Andrew said, "Here is a boy with five loaves of barley bread and two little fish. But that is not enough for so many people." Jesus said, "Tell everyone to sit down." This was a place with a lot of grass, and about 5000 men sat down there. Jesus took the loaves of bread and gave thanks for them. Then he gave them to the people who were waiting to eat. He did the same with the fish. He gave them as much as they wanted. They all had plenty to eat. When they finished, Jesus said to his followers, "Gather the pieces of fish and bread that were not eaten. Don't waste anything." So they gathered up the pieces that were left. The people had started eating with only five loaves of barley bread. But the followers filled twelve large baskets with the pieces of food that were left. The people saw this miraculous sign that Jesus did and said, "He must be the Prophet who is coming into the world." John 6:5-14

जब शाम हुई उसके शिष्य झील पर गये और एक नाव में बैठकर वापस झील के पार कफरनहूम की तरफ़ चल पड़े। अँधेरा काफ़ी हो चला था किन्तु यीशु अभी भी उनके पास नहीं लौटा था। तूफ़ानी हवा के कारण झील में लहरें तेज़ होने लगी थीं। जब वे कोई पाँच-छः किलोमीटर आगे निकल गये, उन्होंने देखा कि यीशु झील पर चल रहा है और नाव के पास आ रहा है। इससे वे डर गये। किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "यह मैं हूँ, डरो मत।" फिर उन्होंने तत्परता से उसे नाव में चढ़ा लिया, और नाव शीघ्र ही वहाँ पहुँच गयी जहाँ उन्हें जाना था। यूहन्ना 6:16-21

That evening Jesus' followers went down to the lake. It was dark now, and Jesus had not yet come back to them. They got into a boat and started going across the lake to Capernaum. The wind was blowing very hard. The waves on the lake were becoming bigger. They rowed the boat about three or four miles. Then they saw Jesus. He was walking on the water, coming to the boat. They were afraid. But he said to them, "Don't be afraid. It's me." When he said this, they were glad to take him into the boat. And then the boat reached the shore at the place they wanted to go. John 6:16-21

फिर लोग यीशु के पास नन्हें-मुन्ने बच्चों को लाने लगे ताकि वह उन्हें छू कर आशीष दे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें झिड़क दिया। जब यीशु ने यह देखा तो उसे बहुत क्रोध आया। फिर उसने उनसे कहा, "नन्हे-मुन्ने बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनायेगा, उसमें कभी प्रवेश नहीं करेगा।" फिर उन बच्चों को यीशु ने गोद में उठा लिया और उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीष दी। मरकुस 10:13-16

People brought their small children to Jesus, so that he could lay his hands on them to bless them. But the followers told the people to stop bringing their children to him. Jesus saw what happened. He did not like his followers telling the children not to come. So he said to them, "Let the little children come to me. Don't stop them, because God's kingdom belongs to people who are like these little children. The truth is, you must accept God's kingdom like a little child accepts things, or you will never enter it." Then Jesus held the children in his arms. He laid his hands on them and blessed them.
Mark 10:13-16

"अच्छा चरवाहा मैं हूँ! अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपनी जान दे देता है।"
यूहन्ना 10:11

"मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा। और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा।"
यूहन्ना 10: 27-28

"I am the good shepherd, and the good shepherd gives his life for the sheep."
John 10:11

"My sheep listen to my voice. I know them, and they follow me. I give my sheep eternal life. They will never die, and no one can take them out of my hand."
John 10:27-28

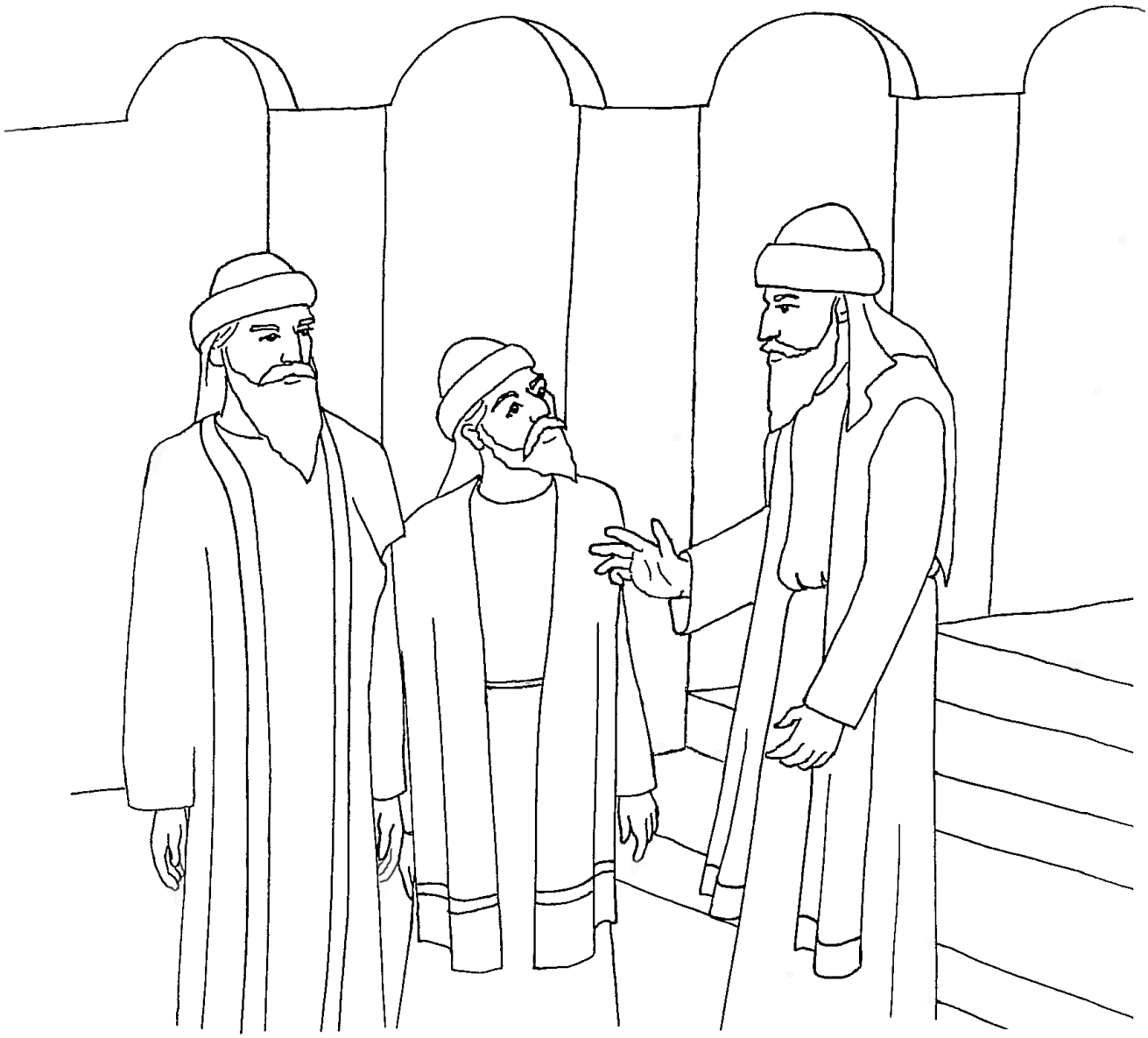

फिर महायाजकों और फ़रीसियों ने यहूदियों की सबसे ऊँची परिषद बुलाई। और कहा, "हमें क्या करना चाहिये? यह व्यक्ति बहुत से आश्चर्य चिन्ह दिखा रहा है। यदि हमने उसे ऐसे ही करते रहने दिया तो हर कोई उस पर विश्वास करने लगेगा और इस तरह रोमी लोग यहाँ आ जायेंगे और हमारे मन्दिर व देश को नष्ट कर देंगे।" किन्तु उस वर्ष के महायाजक कैफा ने उनसे कहा, "तुम लोग कुछ भी नहीं जानते। और न ही तुम्हें इस बात की समझ है कि इसी में तुम्हारा लाभ है कि बजाय इसके कि सारी जाति ही नष्ट हो जाये, सबके लिये एक आदमी को मारना होगा।" यह बात उसने अपनी तरफ़ से नहीं कही थी पर क्योंकि वह उस साल का महायाजक था उसने भविष्यवाणी की थी कि यीशु लोगों के लिये मरने जा रहा है। न केवल यहूदियों के लिये बल्कि परमेश्वर की संतान जो तितर-बितर हैं, उन्हें एकत्र करने के लिये। इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मारने को कुचक्र रचने लगे। यूहन्ना 11:47-53

Then the leading priests and Pharisees called a meeting of the high council. They said, "What should we do? This man is doing many miraculous signs. If we let him continue doing these things, everyone will believe in him. Then the Romans will come and take away our Temple and our nation." One of the men there was Caiaphas. He was the high priest that year. He said, "You people know nothing! It is better for one man to die for the people than for the whole nation to be destroyed. But you don't realize this." Caiaphas did not think of this himself. As that year's high priest, he was really prophesying that Jesus would die for the Jewish people. Yes, he would die for the Jewish people. But he would also die for God's other children scattered all over the world. He would die to bring them all together and make them one people. That day the Jewish leaders began planning to kill Jesus. John 11:47-53

नि ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे पर झुका बैठा था। तभी उनके भोजन करते वह बोला, "मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से पकड़वायेगा।" वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने लगा, "प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ! बता क्या मैं हूँ? तब यीशु ने उत्तर दिया, "वही जो मेरे साथ एक थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"

मत्ती 26:20-23

In the evening Jesus was at the table with the twelve followers. They were all eating. Then Jesus said, "Believe me when I say that one of you twelve here will hand me over to my enemies." The followers were very sad to hear this. Each one said, "Lord, surely I am not the one!" Jesus answered, "One who has dipped his bread in the same bowl with me will be the one to hand me over." Matthew 26:20-23

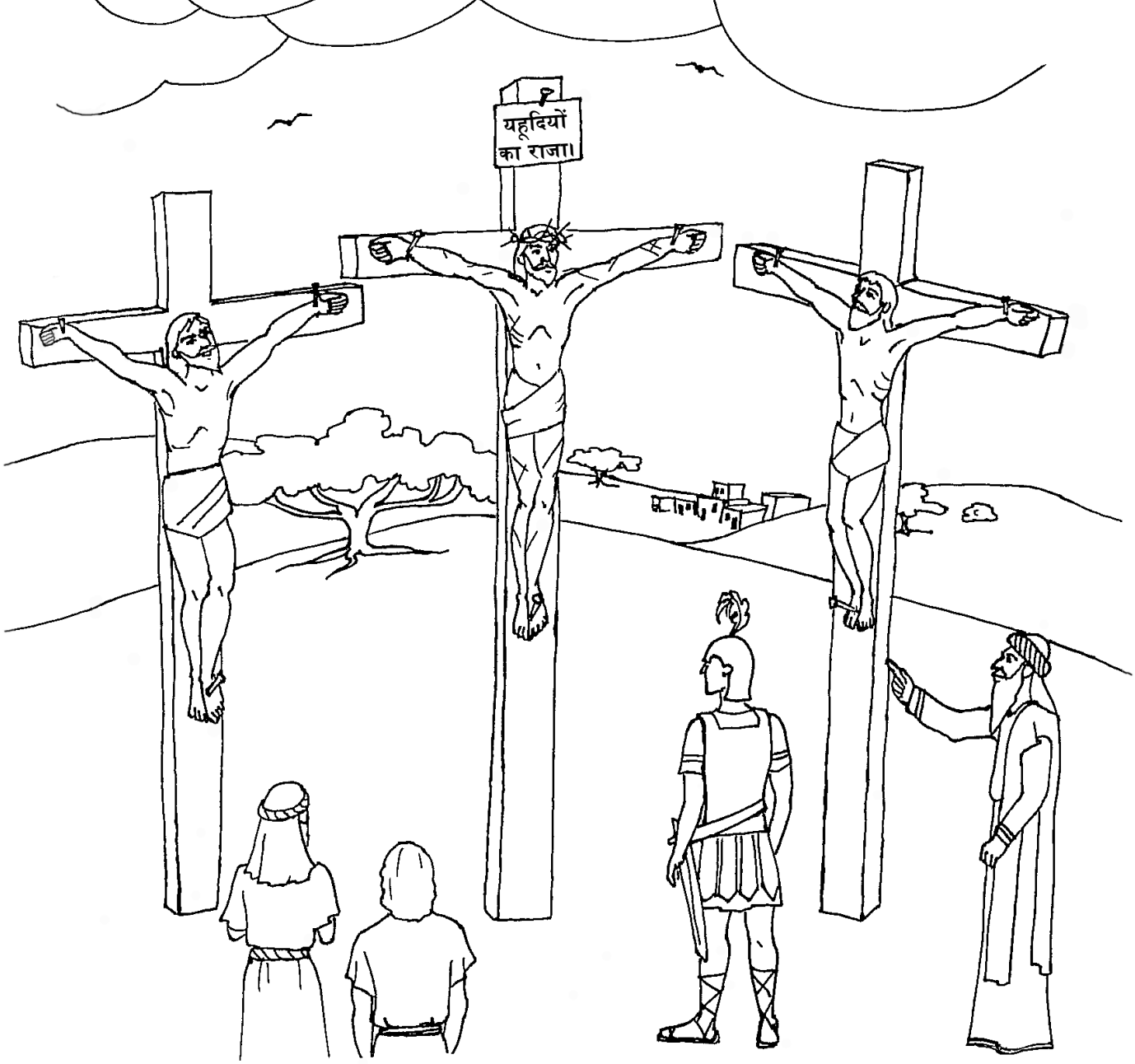

दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे, उसके साथ मृत्यु दण्ड के लिये बाहर ले जाये जा रहे थे। फिर जब वे उस स्थान पर आये जो खोपड़ी कहलता है तो उन्होंने उन दोनों अपराधियों के साथ उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। एक अपराधी को उसके दाहिनी और दूसरे को बाँई ओर। वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने उसका अपमान करते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? हमें और अपने आप को बचा ले।" किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते हुए कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? तुझे भी वही दण्ड मिल रहा है। किन्तु हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण है क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिये जो हमें मिलना चाहिये था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है।" फिर वह बोला, "यीशु जब तू अपने राज्य में आये तो मुझे याद रखना।" यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" लूका 23:32-33 & 39-43

There were also two criminals led out with Jesus to be killed. They were led to a place called "The Skull." There the soldiers nailed Jesus to the cross. They also nailed the criminals to crosses beside Jesus—one on the right and the other on the left. One of the criminals hanging there began to shout insults at Jesus: "Aren't you the Christ? Then save yourself, and save us too!" But the other criminal stopped him. He said, "You should fear God. All of us will die soon. You and I are guilty. We deserve to die because we did wrong. But this man has done nothing wrong." Then he said, "Jesus, remember me when you begin ruling as king!" Then Jesus said to him, "I promise you, today you will be with me in paradise." Luke 23:32-33 & 39-43

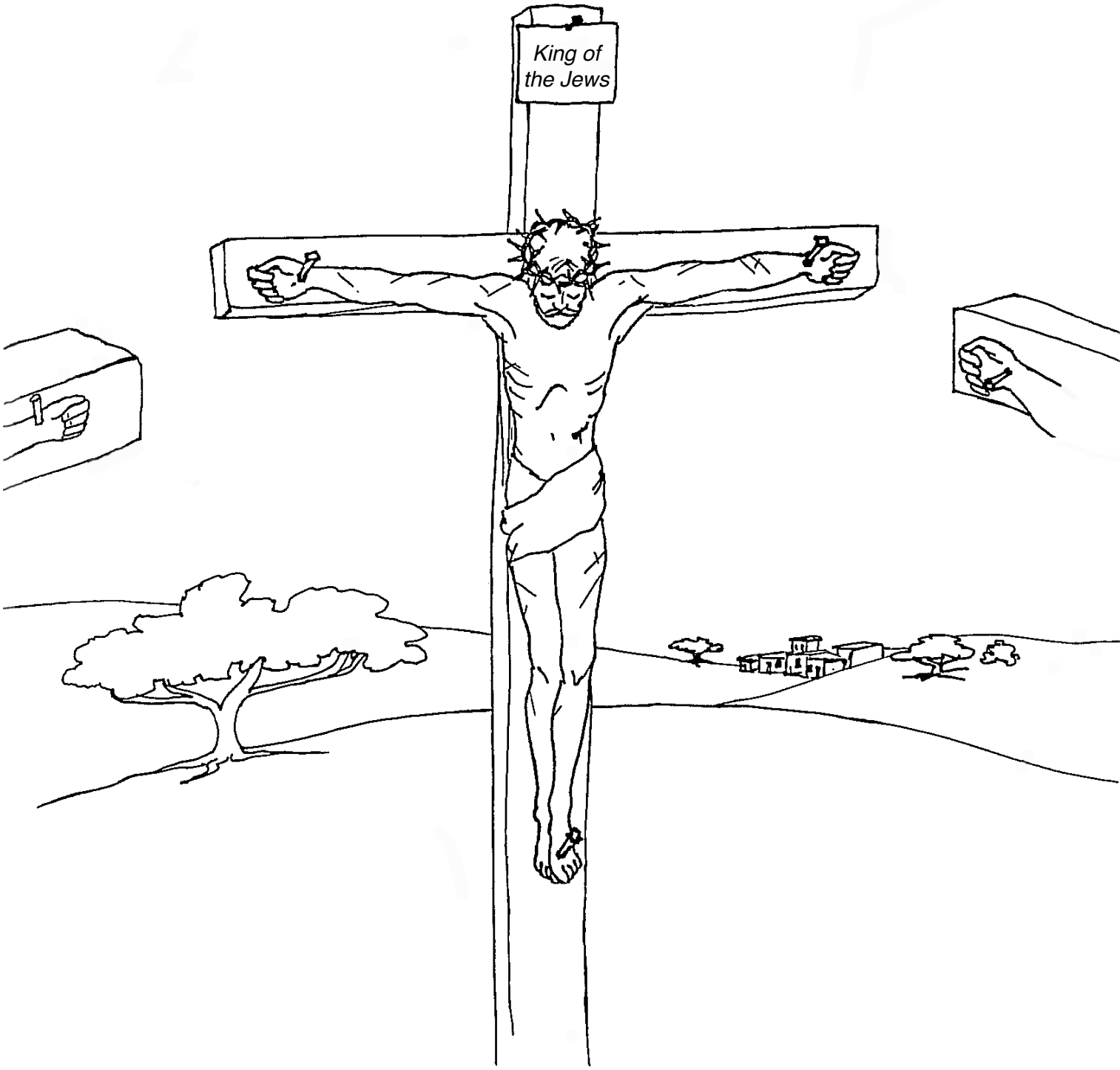

उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी तीन बजे तक समूची धरती पर गहरा अंधकार छा गया। सूरज भी नहीं चमक रहा था। उधर मन्दिर में परदे के फट कर दो टुकड़े हो गये। यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, "हे परम पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये। जब रोमी सेनानायक ने, जो कुछ घटा था, उसे देखा तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने कहा, "यह निश्चय ही एक अच्छा मनुष्य था!" लूका 23:44-47

It was about noon, but it turned dark throughout the land until three o'clock in the afternoon, because the sun stopped shining. The curtain in the Temple was torn into two pieces. Jesus shouted, "Father, I put my life in your hands!" After Jesus said this, he died. The army oficer there saw what happened. He praised God, saying, "I know this man was a good man!" Luke 23:44-47

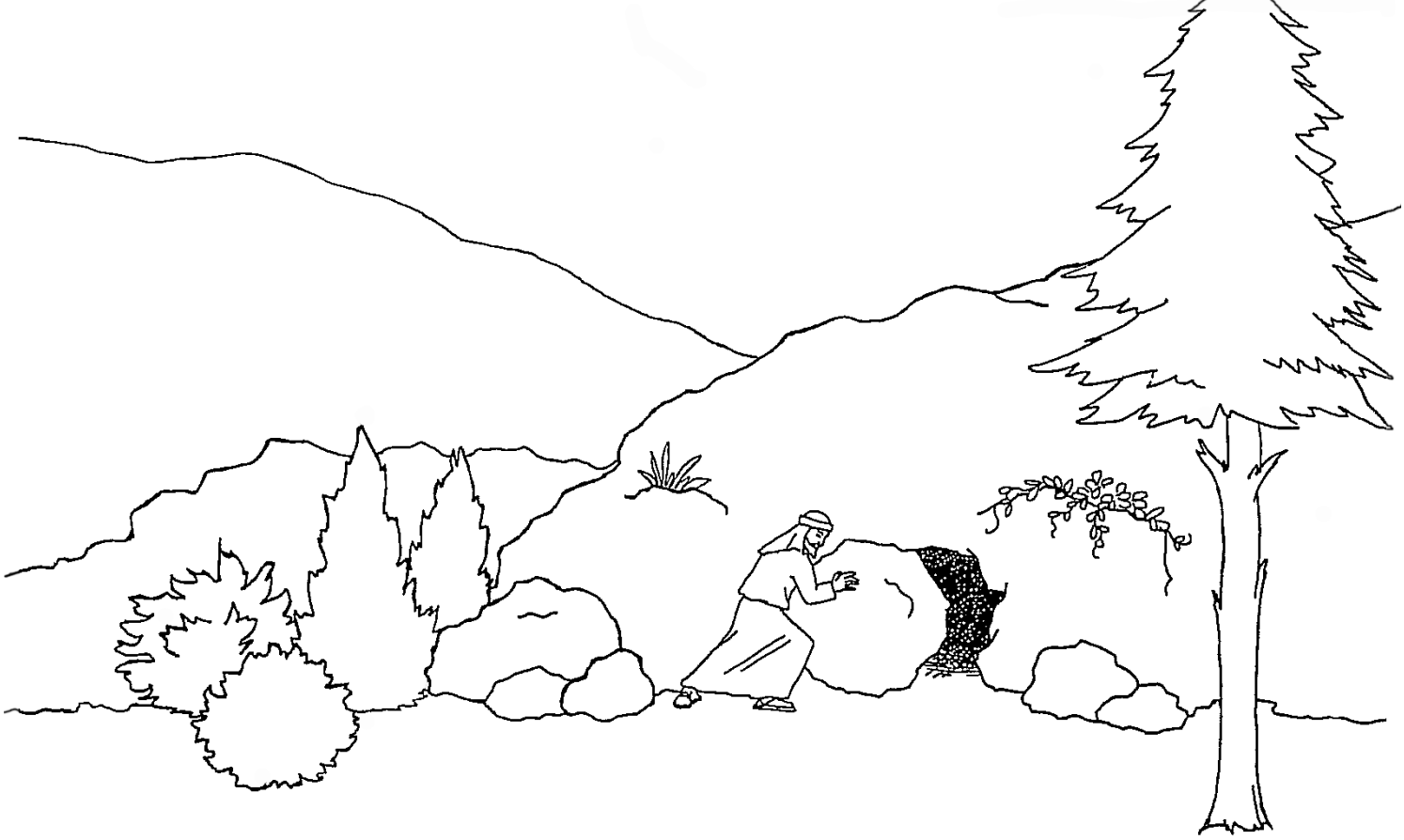

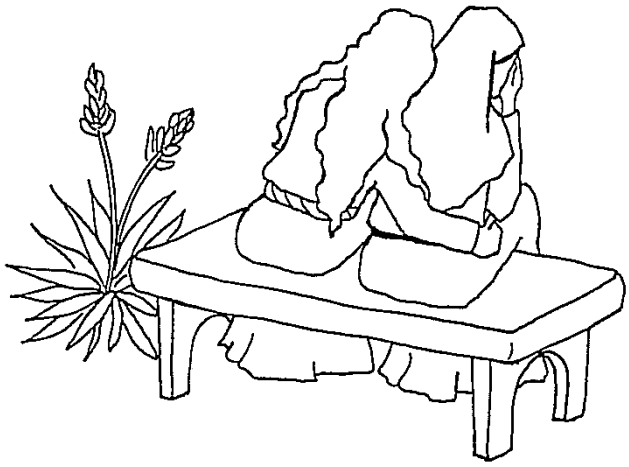

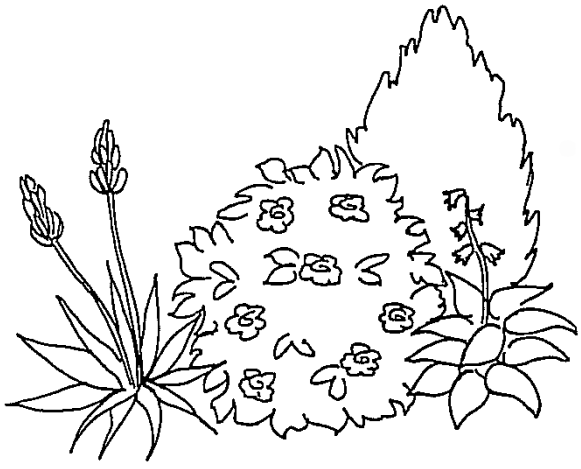

साँझ के समय अरिमतियाह नगर से यूसुफ़ नाम का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी हो गया था। यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये। यूसुफ ने शव ले लिया और उसे एक नयी चादर में लपेट कर अपनी निजी नयी कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर बनवाया था। फिर उसने चट्टान के दरवाज़े पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं। मत्ती 27:57-61

That evening a rich man named Joseph came to Jerusalem. He was a follower of Jesus from the town of Arimathea. He went to Pilate and asked to have Jesus' body. Pilate gave orders for the soldiers to give Jesus' body to him. Then Joseph took the body and wrapped it in a new linen cloth. He put Jesus' body in a new tomb that he had dug in a wall of rock. Then he closed the tomb by rolling a very large stone to cover the entrance. After he did this, he went away. Mary Magdalene and the other woman named Mary were sitting near the tomb. Matthew 27:57-61

सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे ही वे स्त्रियाँ कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने तैयार किया था, लेकर आयी। उन्हें कब्र पर से पत्थर लुढ़का हुआ मिला। सो वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें वहाँ प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। जब वे इस पर अभी उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। डर के मारे उन्होंने धरती की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों ने उनसे कहा, "जो जीवित है, उसे तुम मुर्दों के बीच क्यों ढूँढ रही हो? वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने तुमसे क्या कहा था। उसने कहा था कि 'मनुष्य के पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर देना निश्चित है।" तब उन स्त्रियों को उसके शब्द याद हो आये। लूका 24:1-8

Very early Sunday morning, the women came to the tomb where Jesus' body was laid. They brought the sweet-smelling spices they had prepared. They saw that the heavy stone that covered the entrance had been rolled away. They went in, but they did not find the body of the Lord Jesus. They did not understand this. While they were wondering about it, two men in shining clothes stood beside them. The women were very afraid. They bowed down with their faces to the ground. The men said to them, "Why are you looking for a living person here? This is a place for dead people. Jesus is not here. He has risen from death. Do you remember what he said in Galilee? He said the Son of Man must be handed over to the control of sinful men, be killed on a cross, and rise from death on the third day." Then the women remembered what Jesus had said. Luke 24:1-8

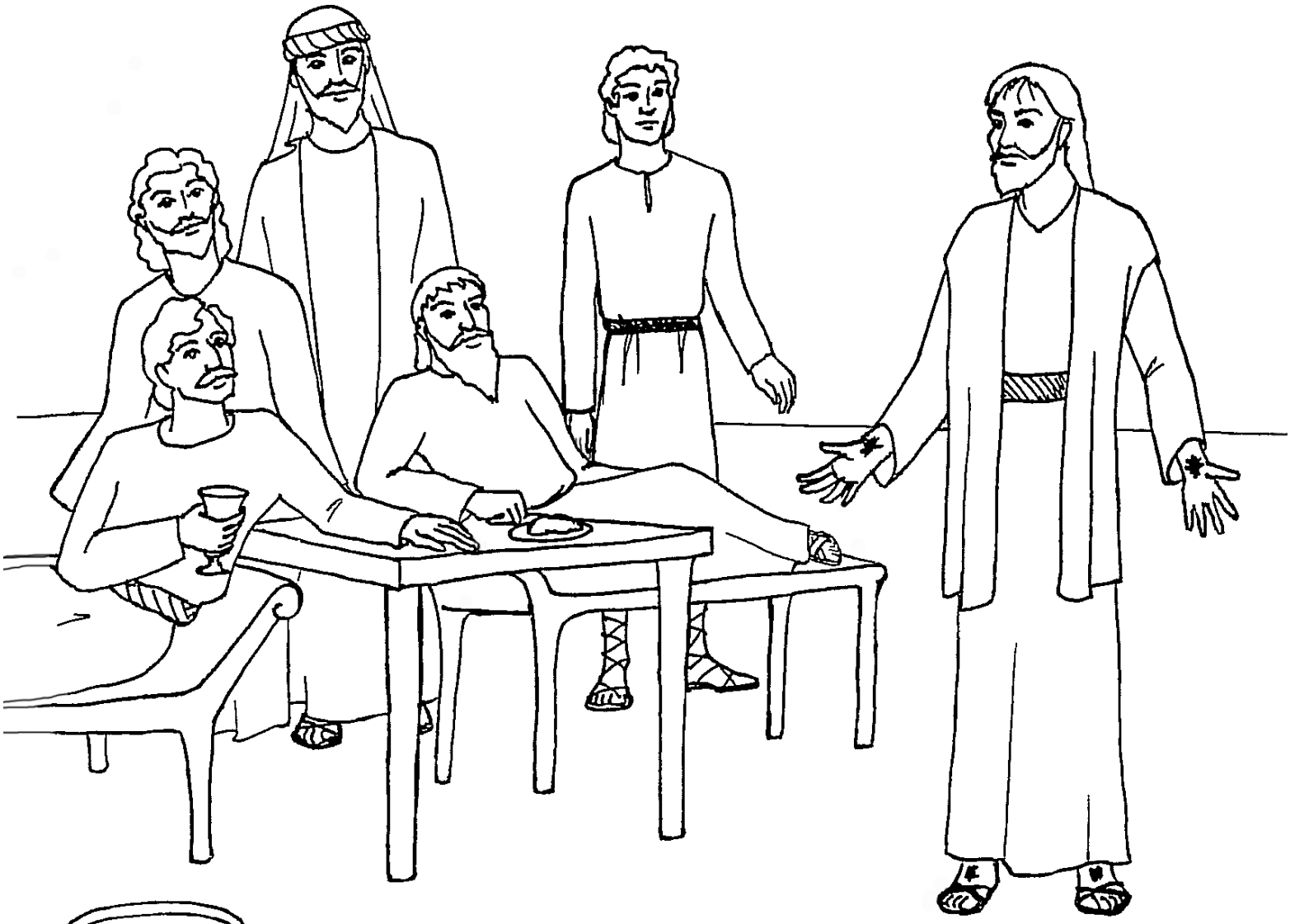

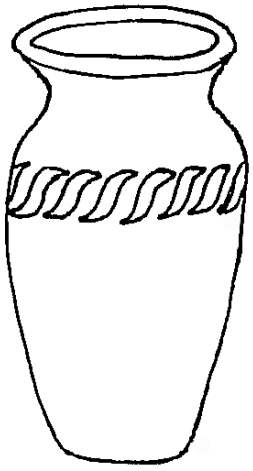

फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम को चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे लोग उनके साथ इकट्ठे मिले, जो कह रहे थे, "हे प्रभु, वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को दर्शन दिया है।" फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका ब्योरा दिया और बताया कि जब उसने रोटी के टुकड़े लिये थे, तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान लिया था। अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, "तुम्हें शान्ति मिले।" किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे। उन्होंने सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों। किन्तु वह उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं? मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो कि किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।" यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें दिखाये। लूका 24:33-40

So the two men got up then and went back to Jerusalem. There they found the followers of Jesus meeting together. The eleven apostles and the people with them said, "The Lord really has risen from death! He appeared to Simon." Then the two men told what had happened on the road. They talked about how they recognized Jesus when he shared the bread with them. While the two men were saying these things to the other followers, Jesus himself came and stood among them. He said to them, "Peace be with you." This surprised the followers. They were afraid. They thought they were seeing a ghost. But Jesus said, "Why are you troubled? Why do you doubt what you see? Look at my hands and my feet. It's really me. Touch me. You can see that I have a living body; a ghost does not have a body like this." After Jesus told them this, he showed them his hands and his feet. Luke 24:33-40

और उसने उनसे कहा, "यह वही है, जो लिखा है कि मसीह यातना भोगेगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से आरंभ होकर सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। तुम इन बातों के साक्षी हो। यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया। और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। उन्हें आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में उठा लिया गया। लूका 24:46-48 & 50-51

Jesus said to them, "It is written that the Christ would be killed and rise from death on the third day. You saw these things happen—you are witnesses. You must go and tell people that they must change and turn to God, which will bring them his forgiveness. You must start from Jerusalem and tell this message in my name to the people of all nations." Jesus led his followers out of Jerusalem almost to Bethany. He raised his hands and blessed his followers. While he was blessing them, he was separated from them and carried into heaven. They worshiped him and went back to Jerusalem very happy. They stayed at the Temple all the time, praising God. Luke 24:46-48 & 50-51

परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे अनन्त जीवन मिल जाये। परमेश्वर ने अपने बेटे को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके द्वारा दुनिया का उद्धार हो। जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में विश्वास नहीं रखा है। यूहन्ना 3:16-18

Yes, God loved the world so much that he gave his only Son, so that everyone who believes in him would not be lost but have eternal life. God sent his Son into the world. He did not send him to judge the world guilty, but to save the world through him. People who believe in God's Son are not judged guilty. But people who do not believe are already judged, because they have not believed in God's only Son. John 3:16-18

यदि हम कहते हैं कि हममें कोई पाप नहीं है तो हम स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और हममें सच्चाई नहीं है। यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो हमारे पापों को क्षमा करने के लिए परमेश्वर विश्वसनीय है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों से हमें शुद्ध करता है। 1 यूहन्ना 1:8-9

If we say that we have no sin, we are fooling ourselves, and the truth is not in us. But if we confess our sins, God will forgive us. We can trust God to do this. He always does what is right. He will make us clean from all the wrong things we have done. If we say that we have not sinned, we are saying that God is a liar and that we don't accept his true teaching. I John 1:8-9

यीशु ने उससे कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता।
यूहन्ना 14:6

Jesus answered, "I am the way, the truth, and the life. The only way to the Father is through me."
John 14:6

"अरे, ओ थके-माँदे, बोझ से दबे लोगो। मेरे पास आओ, मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। मेरा जुआ लो और उसे अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझसे सीखो क्योंकि मैं सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये सुख-चैन मिलेगा। क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल रहा हूँ, हल्का है।"
मत्ती 11:28-30

"Come to me all of you who are tired from the heavy burden you have been forced to carry. I will give you rest. Accept my teaching. Learn from me. I am gentle and humble in spirit. And you will be able to get some rest. Yes, the teaching that I ask you to accept is easy. The load I give you to carry is light." Matthew 11:28-30

यीशु ने और भी अनेक आश्चर्य चिन्ह अपने अनुयायियों को दर्शाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं। और जो बातें यहाँ लिखी हैं, वे इसलिए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है। और इसलिये कि विश्वास करते हुए उसके नाम से तुम जीवन पाओ। यूहन्ना 20:30-31

Jesus did many other miraculous signs that his followers saw, which are not written in this book. But these are written so that you can believe that Jesus is the Christ, the Son of God. Then, by believing, you can have life through his name. John 20:30-31

मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और मैं ही अन्तिम हूँ।" मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।
प्रकाशित वाक्य 22:13

"I am the Alpha and the Omega, the First and the Last, the Beginning and the End." Revelation 22:13

AΩ

क्या यह प्रार्थना आप के ह्रदय की इच्छा को प्रकट करती है? यदी हाँ तो आप यह प्रार्थना कीजिए और यीशु अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आपके जीवन में आएंगे।

"प्रभु यीशु, मै जानता हुँ कि मैं पापी हूँ और मुझे आपकी आवश्यकता है। मैं धन्यवाद देता हूँ कि आप मेरे पापों को मुझ से दूर ले जाने के लिए क्रूस पर मरे। मेरे पापों की क्षमा और अनन्त जीवन देने के लिए धन्यवाद। मैं आपको अपना उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में अपने जीवन में आमन्त्रित करता हूँ। कृपया मेरे जीवन पर अपना नियन्त्रण रखें।"

नाम _____ तारीख _____

* * * * *

Does this prayer express the desire of your heart? If it does, pray this prayer and Christ will come into your life as He promised:

"Lord Jesus, I realize that I am a sinner and need you in my life. I thank you for dying on the cross to take away my sins. Thank you for forgiving my sins and giving me eternal life. I invite you into my life as Savior and Lord. Please take control of my life."

Name _____*Date* _____

Scripture portions taken from the
HINDI HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2010
And
ENGLISH HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006
by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission.

चित्रांकण – लिण्डा रिडेल

Illustrated by: Linda Riddell

www.goodnewscoloringbook.org

Hindi/English Teaching Edition

हिन्दी